विद्याश्रीन्यास
वर्ष २००८ के आयोजन

संगोष्ठी : संस्कृति और समन्वय

'विद्याश्री न्यास' द्वारा १४ जनवरी, २००८ को पंडित जी के जन्म दिवस पर 'संस्कृति और समन्वय' विषय पर वाराणसी में विचारगोष्ठी आयोजित की गयी, जिसके अध्यक्ष समाजवादी रुझान के उपन्यासकार और आलोचक डॉ. युगेश्वर, मुख्य अतिथि प्रो. हरिदत्त शर्मा तथा संचालक डॉ. बलराज पाण्डेय थे। विषय का प्रवर्तन करते हुए प्रो. अवधेश प्रधान ने 'संस्कृति' को 'कल्चर' से पूर्णतः भिन्न, 'देश-काल के प्रवाह में मानवता को सदा सकारात्मक संस्कार देने वाली संवेदनात्मक वस्तु' के रूप में परिभाषित किया और भारतीय संस्कृति को प्रकृतिपूजक, सर्वहितवादी, अंतःप्रकृति के सूत्रों से विभिन्नताओं में अभिन्नता और बहुत्व में एकता स्थापित करने वाली अक्षय निधि के रूप में प्रस्तुत किया। डॉ. अनन्त मिश्र ने भारतीय संस्कृति को गुणों, विचारों और मूल्यों का समेकित समुच्चय करार दिया, जो स्वयं में एक समन्वय है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय ने आज के विरोधाभासी आचार-विचारों को संस्कृति-विरोधी मानते हुए भारतीय संस्कृति के समन्वयी संदेश को आगे बढ़ाने के लिए पं. विद्यानिवास मिश्र के विचारों के अनुसरण पर बल दिया। गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. युगेश्वर ने पंडित जी को 'समन्वयी संस्कृति का अवतार' घोषित करते हुए कहा कि उन्होंने कभी किसी के प्रति आक्रामकता नहीं अपनायी, न ही किसी को उपेक्षा या अनादर भाव से देखा, बल्कि सबका आत्मीयता से स्वागत किया। गोष्ठी में न्यायमूर्ति ज्ञानदत्त चतुर्वेदी, राय आनन्द कृष्ण, प्रो. शिवजी उपाध्याय, नीरजा माधव, अरुणेश नीरन, प्रो. सर्वजीत राय, विद्याविन्दु सिंह, डॉ. दयानाथ तिवारी, डॉ उमाकान्त त्रिपाठी, पवन शास्त्री, प्रभाकर मिश्र, डॉ. श्रीप्रकाश शुक्ल, डॉ. रघुवंशमणि पाठक प्रभृति विद्वानों ने भाग लिया।

धन्यवाद-प्रकाश के क्रम में पंडित जी के कनिष्ठ अनुज डॉ. दयानिधि मिश्र ने पंडित जी की उत्सवप्रियता और सबको जोड़ने का अभियान निरन्तर जारी रखने के संकल्प की उद्घोषणा की।

'चिकितुषी' का लोकार्पण

उक्त अवसर पर विद्याश्री न्यास की सांवत्सर शोध-पत्रिका **'चिकितुषी'** द्वितीय अंक का लोकार्पण इतिहासविद **डॉ. दयानाथ तिवारी** द्वारा किया गया।

काव्य संध्या

१४ जनवरी को सायंकाल **पं. चन्द्रभूषणधर द्विवेदी** की अध्यक्षता में कविगोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें संस्कृत के चार शीर्षस्थ कवियों **प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी, प्रो. हरिदत्त शर्मा, प्रो. शिवजी उपाध्याय** और **संत सीताराम कविराज** के काव्यपाठ ने गोष्ठी को अपूर्व भव्यता प्रदान की। डॉ. अशोक सिंह, श्रीकृष्ण तिवारी, अनन्त मिश्र, नीरजा माधव, डॉ. बलराज पाण्डेय, वशिष्ट मुनि ओझा, राम अवतार पाण्डेय, प्रकाश उदय आदि वरिष्ठ कवियों की रचनाएँ तो उत्कृष्ठ थीं हीं, उदीयमान कवि अलिन्द उपाध्याय की 'माँ' शीर्षक रचना में वर्णित मातृत्व के विराट् बहुआयामी रूप ने श्रोताओं को चमत्कृत-सा कर दिया।

लोककवि-सम्मान

काव्य संध्या के साथ ही लोककवियों के सम्मान की परम्परा में न्यास की ओर से लोककवि पं. हरिराम द्विवेदी को सम्मानित किया गया।

संस्कृत कवि समवाय

पूर्व की भाँति पं. विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि पर १४ फरवरी २००८ को एक संस्कृत कवि समवाय का आयोजन वाराणसी में किया गया तथा लखनऊ प्रेस क्लब में 'राष्ट्रीय अस्मिता व हिन्दी' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन यूथ आर्गनाइजेशन आफ सोशल गवर्नेंस के संयुक्त तत्त्वावधान में किया गया। जिसकी अध्यक्षता डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित ने की तथा गोष्ठी में श्री गोपाल चतुर्वेदी, आर.सी. दीक्षित, एस.बी.एम. तिवारी, विद्याविन्दु सिंह, शैलनाथ चतुर्वेदी, शीला मिश्र, योगेन्द्र प्रसाद सिंह आदि ने भाग लिया।

व्याख्यान

दिनाङ्क ३ दिसम्बर से ५ दिसम्बर २००८ तक पं. विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यानमाला की शृंखला में तीसरा व्याख्यान अलंकारशास्त्र, ध्वनि-विज्ञान और रस

सिद्धांत पर साहित्यमर्मज्ञ श्री सुरेशचन्द्र पाण्डेय द्वारा 'हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद' के सभागार में दिया गया।

प्रकाशन

अप्रकाशित रचनाओं के प्रकाशन की शृंखला में **'रहिमन पानी राखिये', 'भारतीय संस्कृति के आधार', 'श्रीगीतगोविन्दम्, हिन्दी-संस्कृत-व्याख्याद्वयोपेतम्', 'कितने मोर्चे', 'साहित्य का सरोकार', 'अज्ञेय वन का छंद', 'भक्ति प्रबन्ध का नया उत्कर्ष : तुलसीदास', 'फाउण्डेशन आफ इण्डियन एथेटिक्स'** एवं **पं. विद्यानिवास मिश्र स्मृति-ग्रन्थ 'अक्षर पुरुष'** का प्रकाशन कराया गया।